भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 2178
उत्तर देने की तारीख 09.12.2024

राष्ट्रीय अकादमियों की क्षेत्रीय पहुंच

2178. श्री विष्णु दयाल राम :

क्या संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार राष्ट्रीय अकादमियों की असमान क्षेत्रीय पहुंच तथा सांस्कृतिक रूप से समृद्ध राज्यों और जनजातीय क्षेत्रों में सीमित उपस्थिति से अवगत है;

(ख) क्या सरकार वंचित राज्यों और क्षेत्रों में क्षेत्रीय केंद्र स्थापित करने के लिए भी कोई विशेष उपाय कर रही है;

(ग) यदि हां, तो जनजातीय और ग्रामीण क्षेत्रों में केंद्र स्थापित करने की योजना सहित तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(घ) यदि नहीं, तो तत्संबंधी कारण क्या हैं तथा सम्पूर्ण भारत में उपस्थिति दर्ज करने में सरकार के समक्ष क्या चुनौतियां हैं?

उत्तर

संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री
(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

(क) से (घ): भारत सरकार देश की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता को पहचानते हुए सांस्कृतिक रूप से समृद्ध राज्यों और जनजातीय क्षेत्रों सहित, सभी क्षेत्रों में राष्ट्रीय अकादमियों की पहुंच सुनिश्चित करने हेतु प्रतिबद्ध है। इन अकादमियों ने क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों, राज्य अकादमियों और अन्य सरकारी निकायों के साथ कार्यनीतिक भागीदारियों के माध्यम से अपनी पहुंच विस्तारित करते हुए जीवंत कला पारिस्थितिकी को सफलतापूर्वक प्रोत्साहित किया है। यह कार्य देश भर में पहले से ही मौजूद क्षेत्रीय केन्द्रों और उप केन्द्रों के व्यापक नेटवर्क के अतिरिक्त है। ये संस्थाएं और केन्द्र जनजातीय समुदायों की आवश्यकताओं पर

विशेष रूप से बल देते हुए उनके संबंधित क्षेत्रों की विविधतापूर्ण सांस्कृतिक धरोहर को सक्रिय रूप से संवर्धित और परिरक्षित करती हैं। कुछ प्रमुख पहलें नीचे दी गई हैं:

(i) सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र (सीसीआरटी) ने अपनी पहुंच को ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों तक विस्तारित करने हेतु गुवाहाटी, उदयपुर, हैदराबाद और दमोह में चार क्षेत्रीय केन्द्र स्थापित किए हैं।

(ii) ललित कला अकादेमी (एलकेए) भारत के स्थानीय क्षेत्रों में अनेक कार्यक्रम आयोजित करती है और विश्व भर से कलाकारों को प्रदर्शनियों और कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए आमंत्रित करती है जिनमें जनजातीय क्षेत्र के कलाकार भी शामिल हैं। कलाकारों को ललित कला अकादमी के दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई, लखनऊ, भुवनेश्वर, अगरतला और शिमला में स्थित केन्द्रों में अपनी कृतियां प्रदर्शित करने हेतु गैलरियां भी प्रदान की जाती हैं। एलकेए चेन्नई, गढ़ी, लखनऊ, कोलकाता, अगरतला और भुवनेश्वर में छः क्षेत्रीय केन्द्र परिचालित करता है।

(iii) **साहित्य अकादमी (एसए)** भारतीय साहित्य के संरक्षण, संवर्धन और उसे समृद्ध बनाने के प्रति समर्पित है। एसए ने कारगिल, लक्षद्वीप, पोर्ट ब्लेयर, आइजोल, कोहिमा और पासीघाट जैसे स्थानों पर राष्ट्रीय स्तर के साहित्यिक कार्यक्रमों की मेजबानी की है। अकादमी के मुंबई, कोलकाता, बेंगलुरु और चेन्नई में चार क्षेत्रीय केंद्र हैं। इसने अगरतला में नॉर्थ-ईस्ट सेंटर फॉर ओरल लिटरेचर (एनईसीओएल) की स्थापना भी की है, जो पूर्वोत्तर की गैर-मान्यता प्राप्त भाषाओं पर ध्यान केंद्रित करता है और उपयुक्त प्रकाशन निकालता है और भाषा-विशिष्ट कार्यकलापों और कार्यक्रमों का आयोजन करता है।

(iv) राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (एनएसडी) ने ग्रामीण और जनजातीय समुदायों तक पहुंच बढ़ाने के लिए बेंगलुरु, अगरतला, गंगटोक, वाराणसी और श्रीनगर में पांच क्षेत्रीय केंद्र स्थापित किए हैं।

(v) **इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए)** भारत की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आईजीएनसीए के नौ क्षेत्रीय केंद्र हैं जो वाराणसी, गुवाहाटी, बेंगलुरु, रांची, वडोदरा, गोवा, त्रिशूर, पुदुचेरी और जम्मू और कश्मीर में स्थित हैं।

(vi) **क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र (जेडसीसी),** जिनमें जून, 1986 में स्थापित उत्तर पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र (एनईजेडसीसी) भी शामिल है, अपने जनजातीय क्षेत्रों सहित, पूर्वोत्तर क्षेत्र की कलाओं तथा शिल्पों के संवर्धन, परिरक्षण और नवोन्मेष के प्रति समर्पित हैं।

*****